SHODH SAGAR®
International Journal for Research Publication and Seminar
ISSN: 2278-6848 | Vol. 15 | Issue 1 | Jan - Mar 2024 | Peer Reviewed & Refereed

वाल्मीकि रामायण में ब्रह्मचर्य का स्वरूप

मुकेश कुमार मंडल[1],
[1]शोधार्थी योग विज्ञान विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार

आदित्य प्रकाश सिंह[2]
शोधार्थी योग विज्ञान विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार

DOI: https://doi.org/10.36676/jrps.v15.i1.1422
Published: 29/01/2024

Check for updates

* Corresponding author

सारांश

वाल्मीकि रामायण में ब्रह्मचर्य का स्वरूप एक व्यापक और गहन विषय है जो प्राचीन भारतीय समाज और संस्कृति में नैतिक और आध्यात्मिक अनुशासन के महत्व को प्रकट करता है। ब्रह्मचर्य का अर्थ होता है ब्रह्म (ईश्वर) की ओर गतिशील होना और इसमें शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक संयम शामिल होता है। रामायण में ब्रह्मचर्य के स्वरूप को प्रमुख पात्रों के माध्यम से समझा जा सकता है। भगवान राम, लक्ष्मण, भरत, माता सीता और हनुमान। वाल्मीकि रामायण में ब्रह्मचर्य का स्वरूप केवल शारीरिक संयम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी गहरे अर्थ रखता है। यह आत्मसंयम, त्याग, सेवा, और धर्म के प्रति अटल समर्पण का प्रतीक है। राम, लक्ष्मण, और हनुमान के जीवन और उनके कार्यों के माध्यम से ब्रह्मचर्य का आदर्श स्वरूप प्रस्तुत किया गया है, जो आज भी समाज में नैतिकता और अनुशासन की महत्वपूर्णता को रेखांकित करता है। इस प्रकार, वाल्मीकि रामायण में ब्रह्मचर्य का स्वरूप न केवल प्राचीन भारतीय समाज के नैतिक और धार्मिक आदर्शों को उजागर करता है, बल्कि यह वर्तमान समाज के लिए भी एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक मार्गदर्शन प्रदान करता है।

कूट शब्द– वाल्मीकि रामायण, ब्रह्मचर्य, योग, ग्रन्थ, जीवन

प्रस्तावना

ब्रह्मचर्य योग के आधार भूत स्तंभों में से एक है। योग के क्षेत्र में परिवृत्त होने के लिए तथा जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य बताया गया है। ब्रह्मचर्य का वर्णन वेदों में उपनिषदों में महाकाव्यो जैसे रामायण, महाभारत, पुराणों में तथा हठयोग एवं विभिन्न भारतीय दर्शनों में हमें देखने को मिलता है। ब्रह्म की प्राप्ति के लिए विहित आचरण ही ब्रह्मचर्य कहलाता है। 'ब्रह्म' का अर्थ है 'महान' वृहत जीवन में जो कुछ महान है उसका ध्येय ही ब्रह्म है और इसी की प्राप्ति की विद्या ब्रह्मचर्य है।

वैदिक ग्रंथो में चार प्रकार के आश्रमों का वर्णन मिलता है जिसमें ब्रह्मचर्य आश्रम सर्वप्रथम है। ब्रह्मचर्य– आश्रम का प्रयोजन ज्ञान का उपार्जन होता है। उपनयन संस्कार के पश्चात ब्रह्मचर्य का आरंभ होता है। उपनयन वस्तुतः ब्रह्मचर्य की दीक्षा है। 'उपनयन' का शाब्दिक अर्थ है 'समीप' ले जाना (नयन)। विद्या के उद्देश्य से बालकों को गुरु के पास ले जाना ही उपनयन है।

विभिन्न धर्म शास्त्रकारों की भाँति व्यक्ति के बौद्धिक विकास के लिए वाल्मीकि ने भी जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ब्रह्मचर्य आश्रम की व्याख्या है। राम ने ब्रह्मचर्य का पालन किया था। इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। अयोध्याकांड में भरत कहते हैं– जिसने ब्रह्मचर्य का पालन किया है विधिपूर्वक विद्याध्ययन किया है और जो सदैव धर्मानुष्ठान में संलग्न रहता है उस राम का राज्य मेरे जैसा अनुज कैसे ले सकता है–

चरितंब्रह्मचर्यस्य विद्यास्नास्य धीमतः।
धर्मे प्रचतमानस्य को राज्य मद्विधो हरेत्।।[1]

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com

SHODH SAGAR®
International Journal for Research Publication and Seminar
ISSN: 2278-6848 | Vol. 15 | Issue 1 | Jan - Mar 2024 | Peer Reviewed & Refereed

राम तो नायक है, रामायण के तो प्रतिनायक ने भी ब्रह्मचर्य का पालन किया है। सीता वध के लिए तत्पर रावण सुपार्श्व स्मरण कराता है कि वह तो ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए वेद विद्याव्रतस्नातक हुआ है फिर भी क्यों स्त्री वध जैसे नीच कार्य में प्रवृत हो रहा है।

वेद विद्याव्रतस्नातः स्वकर्मनिरतस्तथा।
स्त्रियः कस्माद् वधं वीरमन्यसे राक्षसेश्वर।।[२]

राम भी विद्याव्रतस्नातक थे–

समयक् विद्याव्रतस्नातो यथावत्साङ्गवेदवित्।[३]

हनुमान तो आजन्म ब्रह्मचारी के रूप में विख्यात है ही।

ब्रह्मचर्य का समय प्रबंधन–

राम का उपनयन संस्कार छठे वर्ष में हुआ चूँकि १६ वे वर्ष में उनका विवाह हुआ। अतः ६–१० वर्ष में तो राम ने आश्रम धर्म अनुसार ब्रह्मचर्य धर्म का पालन किया उसके पश्चात भी उनके ब्रह्मचर्य पालन के प्रमाण मिलते हैं। कैकेयी के मुख से रामवनवास की मांग सुनकर दशरथ विलाप करते हुए कहते हैं–हाय अब तक तो राम वेदों के अध्ययन करने, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने तथा अनेक ने गुरुजनों की सेवा में संलग्न रहने के कारण दुबले हो गए हैं अब जब उनके सुख भोग का समय आया है तब ये वन में जाकर महान कष्ट में पड़ेगा–

वेदैश्च ब्रह्मचर्यश्च गुरुभिश्चोपकर्शितः।
भोगकाले महत्वकृच्छ्रं पुनरेव प्रपत्स्यते।।[४]

इसका अर्थ यह हुआ कि यौवराज्याभिषेक राम का ब्रह्मचर्य और उसकी शिक्षा जारी थी। यौवराज्याभिषेक के पश्चात् उसे इससे मुक्ति मिलने वाली थी, किंतु इसी समय उसे वन जाना पड़ गया, जिसके फल स्वरुप उसे चौदह (१४) वर्षों तक और ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ा। राम सीता वन में तापस धर्म में स्थित रहे और ब्रह्मचर्य का पालन किया–

जटी तापसरूपेण मया सह सहानुजः।।
प्रविष्टो दण्डकारण्यं धर्मनित्यो दृढव्रतः।[५]
शुश्रूषमाणा ते नित्यं नियता ब्रह्मचारिणी।
सहरंस्ये तथा वीर वनेषु मधुगन्धिषु।।[६]

लक्ष्मण ने भी वन में ब्रह्मचर्य का पालन किया–

स भ्राता लक्ष्मणो नाम ब्रह्मचारी दृढव्रतः[७]

जैसा कि हमने पहले ही वर्णन किया है कि वन गमन के अवसर पर राम २२ वर्ष के थे और १४ वर्ष वन में रहे तो कुल मिलाकर उन्होंने ३६ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया। किंतु उसे इससे यह अनुमान करना अनुचित होगा कि वाल्मीकि ३६ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन की व्यवस्था देते हैं। हमारे विचार से उन्होंने लगभग २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन का विधान किया है। दशरथ के कथन से विदित होता है कि २२ वर्ष के राम को यौवराज्याभिषेक के पश्चात् ब्रह्मचर्य व्रत से मुक्ति मिलने वाली थी।[८] १४ वर्ष और ब्रह्मचर्य पालन तो कैकयी के हठ के कारण करना पड़ा। अतः यह कहना तर्कसंगत होगा कि महर्षि को ब्रह्मचर्य की अवधि सामान्यतः २५ वर्ष की आयु तक ही मनाना अभिप्रेत है। दूसरी ओर आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले हनुमान से भी हमारा परिचय करवाते हैं।

ब्रह्मचर्य के प्रकार–

वाल्मीकि ने ब्रह्मचर्य के दो रूपों की ओर संकेत किया है–

नान्यं जानाति विप्रेन्द्रों नित्यं पित्रनुवर्तनात।
द्विविध्यं ब्रह्मचर्यस्य भविष्यति महात्मनः।।[९]

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com

लोकेषु प्रथितं राजन् विप्रैश्च कथितं सदा।

वाल्मीकि ने महर्षि कश्यप के पुत्र विभांडक के ऋष्यशृंग की चर्चा करते हुए कहा है कि ब्रह्मचर्य दो प्रकार का होता है। टीकाकरों ने इसका अर्थ यह लगाया है कि मेखला, मृगचर्म और दंड–धारण एक प्रकार का ब्रह्मचर्य है और विवाह के बाद ऋतुकाल में भार्याभिगमन दूसरे प्रकार का ब्रह्मचर्य है। मेरी दृष्टि में कालांतर में ब्रह्मचर्य के जो भेद प्रसिद्ध हुए नैष्ठिक और उप कुर्वाण उन्हीं का पूर्ण रूप वाल्मीकि का पूर्वोक्त ब्रह्मचर्यद्वैविध्य विधि है। आजीवन ब्रह्मचारी बना रहना नैष्ठिक ब्रह्मचर्य है और गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होने तक ब्रह्मचर्य का पालन कर कोई माणवक कुर्वाण ब्रह्मचारी बन सकता है। रामायण में मेखलाधारी ब्रह्मचारी तथा कठकालापा शाखा के अध्येता ब्रह्मचारियों का बड़ा ही मनोरम वर्णन है। राम वन के लिए प्रस्थान के पूर्व अपना धन लोगों को दान में दे रहे हैं। इसी प्रसंग में राम कहते हैं कि कठकालापा ब्रह्मचारियों के लिए अस्सी ऊंटों पर लादकर रत्न एक हजार बैलों पर चावल दो सौ बैलों पर चना–मूंग तथा घी सब्जी के लिए एक हजार गायें दानस्वरूप दे दी जायें। ये ब्रह्मचारी नित्य स्वाध्यायशील रहने के कारण और कुछ करते ही नहीं, पर स्वादु भोजन पाना चाहते हैं और बड़े लोग उनका बड़ा सम्मान करते हैं।[१०]

ब्रह्मचर्य साधना जन्य सिद्धियां–

महर्षि पतंजलि ने योगसूत्र में कहा है जो योगी पूर्णरूप से ब्रह्मचर्य का पालन करता है, उसे सभी प्रकार की शक्तियों की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्य लाभः[११]

ब्रह्मचारी ऋष्यशृंग की कथा के माध्यम से वाल्मीकि ने ब्रह्मचर्य की अलौकिक शक्ति का सत्प्रभाव अपने काव्य में अति सुंदर ढंग से दर्शाया है अंग देश के राजा से धर्म का उल्लंघन हो जाने के कारण अंगदेश में भयंकर अकाल पड़ा ब्राह्मणों के परामर्श अनुसार राजा ने विभांडक पुत्र ब्रह्मचारीऋषि आश्रम को अपने राज्य में बुलाया उनके आते ही राज्य में वर्षा होने लगी–

तत्र चानीयमाने तु विप्रे तस्मिन् महात्मनि।
ववर्ष सहसा देवो जगत् प्रहलादयस्तदा।।[१२]

ब्रह्मचारी के कर्तव्य कर्म–

ब्रह्मचारी ऋष्यशृंग की जीवनचर्या को देखकर महर्षि को अभिप्रेत ब्रह्मचारी के कर्तव्यों का सहज ही अनुमान किया जा सकता है। ऋष्यशृंग सदैव वन में ही रहते हुए अपने पिता की ओर अग्नि की सेवा में संलग्न रहते हैं।

तस्यैवं वर्तमानस्य कालः समभिवर्तत।
अग्निं शुश्रूषमाणस्य पितरं च यशस्विनम।।[१३]

वे सदा वन में ही रह कर तपस्या और स्वाध्याय में लगे रहते हैं। स्त्रियों को पहचानते तक नहीं और विषयों के सुख में सर्वथा अनभिज्ञ थे–

ऋष्यश्रृंगो वनचरस्तपः स्वाध्यायसंयुतः।
अनभिज्ञस्तु नारीणां विषयाणां सुखस्य च।।[१४]

वेदों के पारगामी हैं–

विभाण्डकसुतं राजन् ब्राह्मणं वेदपारगम।[१५]

मोदक आदि सुस्वादु व्यञ्जनों का उन्होंने पहले कभी आस्वादन नहीं किया था इसलिए उन्हें भी फल समझा।

तानि चास्वाद्य तेजस्वी फलानीति स्म मन्यते।

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com

अनास्वादितपूर्वाणि वने नित्यनिवासिनाम।।[१६]

इस प्रकार वाल्मीकि ने ब्रह्मचारी के लिए निम्नलिखित कर्तव्य निश्चित किए हैं– वेदध्ययन, तपस्या, गुरुजनों की सेवा और अग्नि की सेवा मनु भी ब्रह्मचर्य के इन कर्तव्यों का उल्लेख करते हैं।[१७]

निषिद्ध कर्म–

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वाल्मीकि ने स्त्री संसर्ग और विषयोंपभोगों को ब्रह्मचारी के लिए वर्जित बताया है।[१८]

ब्रह्मचारी का वेश–

पर्वतों की तुलना एक स्थान परब्रह्मचारियों से की गई है जिससे ब्रह्मचारी के वेश का पता चलता है– मेधरूपी, काले मृगचर्म तथा वर्षा की धारा रूपी यज्ञोपवीत धारण किए वायु से पूरित गुफा वाले यह पर्वत ब्रह्मचारियों की भांति मानो वेदध्ययन आरंभ कर रहे हैं।

मेघकृष्णाजिनधराधारायज्ञोपवीतिनः।
मारुतापूरितगुहाः प्राधीता इव पर्वताः।।[१९]

ब्रह्मवादिनी–

रामायण में आजीवन अविवाहित रहकर स्वाध्याय, यज्ञ और तपस्या में संलग्न कन्याओं का भी उल्लेख हुआ है। स्वंय प्रभा ऐसी ही कन्याएं थीं। वे कृष्णमृगचर्म तथा सिर पर जटा धारण करती है और ऋषि प्रोक्त विधि से तपस्या में संलग्न रहती थी।

तत्रापश्यत् स वै कन्या कृष्णाजिनजटाधराम ।
आर्षेण विधिना चौनां दीपयन्तीदेवतामिव।। वाल्मीकि रामायण

उपसंहार

वाल्मीकि रामायण में ब्रह्मचर्य का स्वरूप गहनता और विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया गया है, जो न केवल उस समय के समाजिक और धार्मिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा था, बल्कि आधुनिक समय के लिए भी प्रासंगिक है। रामायण के विभिन्न पात्रों, विशेषकर राम, लक्ष्मण और हनुमान के जीवन में ब्रह्मचर्य के आदर्श और उसका पालन अत्यंत प्रेरणादायक है। राम का जीवन ब्रह्मचर्य के आदर्श का सर्वोत्तम उदाहरण है। उन्होंने न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन किया, बल्कि अपने कर्तव्यों और मर्यादाओं का भी पूरी निष्ठा के साथ पालन किया। राम के जीवन की प्रत्येक घटना और निर्णय में ब्रह्मचर्य का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। ब्रह्मचर्य केवल व्यक्तिगत अनुशासन ही नहीं, बल्कि एक उच्चतर उद्देश्य के प्रति पूर्ण समर्पण और निष्ठा भी है। वाल्मीकि रामायण का नैतिक और सामाजिक संदेश स्पष्ट है। ब्रह्मचर्य एक महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है, जो व्यक्ति को आत्मसंयम, नैतिकता और उच्चतर आदर्शों की ओर प्रेरित करता है। यह समाज के नैतिक ढांचे को मजबूत करने में भी सहायक है, क्योंकि यह व्यक्तियों को अनुशासित और जिम्मेदार बनाता है। आधुनिक संदर्भ में, ब्रह्मचर्य का महत्व और भी बढ़ जाता है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में, जहां मानसिक और शारीरिक तनाव आम हो गए हैं, ब्रह्मचर्य का पालन व्यक्ति को संतुलित और सशक्त बनाने में सहायक हो सकता है। यह व्यक्ति को आत्मसंयम, आत्मनियंत्रण और उच्चतर उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है। अंततः, वाल्मीकि रामायण में ब्रह्मचर्य का स्वरूप न केवल एक धार्मिक और नैतिक आदर्श है, बल्कि यह एक ऐसा जीवन मूल्य है जो व्यक्ति को आत्मसंयम, नैतिकता और उच्चतर आदर्शों की ओर प्रेरित करता है। इसका पालन न केवल व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि यह समाज की नैतिकता और स्थायित्व को भी मजबूत करता है। इस प्रकार, वाल्मीकि रामायण में ब्रह्मचर्य का स्वरूप हमारे लिए एक अनमोल धरोहर है, जिसे हमें संजोकर रखना चाहिए और अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

१. वा.रा. २.८२.११
२. वा.रा. ६.६२.६४
३. वा.रा. २.२.३४
४. वा.रा. २.१२.८४
५. वा.रा. ३.४७.२०१/२
६. वा.रा. २.२७.१३
७. वा.रा. ३.४७.१६
८. वा.रा. २.१२.८४
९. वा.रा. १.६.५
१०. वा.रा. २.३३.१८–२०
११. योगसूत्र २.३८
१२. वा.रा. १.१०.२६
१३. वा.रा. १.६.६
१४. वा.रा. १.१०.३
१५. वा.रा. १.६.१३
१६. वा.रा. १.१०.२१
१७. अग्नीधनं भैक्षचर्यामधरू शययां गुरोर्हितम्।
आ समावार्तनात्कुर्यात्कृतोपनयनो द्विजः।। मनु २.४८
१७. वा.रा. १०१०.३ एवं २१
१८. वा.रा. ४.२८.१०

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://jrps.shodhsagar.com